10 May, 2016

Indian Council of World Affairs
Sapru House, Barakhamba Road
New Delhi

Report

on

National Seminar

on

Act East Policy of the NDA Government

RCA Girls (PG) College, Matura

1-2 February, 2016

आर0सी0ए0 बालिका महाविद्यालय, मथुरा में दिनांक 01–02–2016 से 02–02–2016 को आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमीनार का शुभारम्भ 1 फरवरी, 2016 को उद्घाटन सत्र से हुआ। विदित हो कि यह संगोष्ठी वर्ल्ड काउंसिल ऑफ इन्टरनेशनल अफेयर्स के सौजन्य से आयोजित की गयी। देश के विभिन्न राज्यों से पधाने अतिथिगण एवं विद्वानो द्वारा सहभागिता की गयी।

उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में डपदपेजतल वि मगजमतदंस ।पिते में डिप्टी डायरेक्टर श्री अभिजीत चक्रवर्ती थे आप विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए विशेष रूप से नामित किए गये थे। मुख्य वक्ता के रूप में उद्घाटन सत्र को सुशोभित किया प्रो0 एस0डी0 मुनी ने। एस0डी0 मुनी एक्ट ईस्ट विषय के पारखी एवं अन्तर्राट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान, पूर्व राजदूत एवं वर्तमान में प्देजपजनजम वि क्ममिदेम ैजनकपमे ंदक ।दंसलेपे में सेवाएं दे रहे हैं। विशिष्ठ अतिथि के रूप में अवकाश प्राप्त मेजर जनरल गोविन्द द्विवेदी उपस्थित थे। उद्घाटन सत्र में अध्यक्षता का दायित्व निर्वहन करने के लिए डा0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा के कुलपति प्रो0 एम0 मुजम्मिल उपस्थित थे। उपरोक्त अतिथिगणों के अतिरिक्त उद्घाटन सत्र के मंच को संगोष्ठी की संयोजिका एवं महाविद्यालय प्राचार्या डा0 प्रीति जौहरी उपसंयोजिका डा0 योगेन्द्री, राजनीति शास्त्र विभाग, एवं महाविद्यालय प्रबन्ध समिति के सचिव श्री गिरीश अग्रवाल जी ने भी किया।

उद्घाटन सत्र में प्रस्तुत किए गये वक्तव्यों से ।बज मेंज च्वसपबल वि जीम छव्। ळवअमतदउमदज

विषय पर निम्न महत्वपूर्ण बिन्दु उभर कर आये।

- ।बज मेंज च्वसपबल मूलतः पूर्व प्रधानमंत्री श्री पी0वी0 नरसिम्हाराव की लुक ईस्ट (पूर्व की ओर देखो) नीति का ही परिवर्तित रूप है। जिसके नाम को वर्तमान सरकार ने एक्ट ईस्ट पॉलिसी नाम में परिवर्तित कर दिया है। अतः एक्ट ईस्ट पॉलिसी को समझने के लिए पहले लुक ईस्ट पॉलिसी को समझना आवश्यक ई।
- ''पूर्व की ओर देखो'' नीति मुख्य उद्देश्य पूर्व के देशों के साथ बेहतर सम्बन्धों की स्थापना था जिससे आर्थिक, सामरिक एवं सांस्कृतिक हितों की पूर्ति की जा सके।
- एतिहासिक सन्दर्भों में देखा जाए तो 'एक्ट ईस्ट' या 'लुक ईस्ट' नहीति के आने से पहले भी भारत सहज रूप से पूर्वोन्मुखी रहा है। पूर्वी देशों पर हिन्दु और बौद्ध संस्कृति की छाप इसका स्पष्ट प्रमाण है।
- भारत की विदेश नीति में पूर्वी देशो के साथ संबंधों के चार दौर निकले है– पहला दौर अंगेजों के भारत में आने से पहले का, दूसरा दौर आजादी के बाद प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का, तीसरा प्रधानमंत्री पी0वी0 नरसिम्हाराव के काल में लुक ईस्ट पॉलिसी का अवतरण और चौथा दौर वर्तमान में प्रधानमंत्री मोदी जी का जिसमें लुक ईस्ट पॉलिसी का नाम एक्ट ईस्ट पॉलिसी मे परिवर्तित कर दिया गया। इसके माध्यम से यह संदेश दिया गया की वर्तमान दौर में अब हम पूर्व की और केवल देखेंगे ही वही बल्कि काम

भी करेगें और गर्मजोशी से आगे बढ़ेगे।

- वर्तमान सरकार ने इस नीति मे केवल आर्थक ही नही बल्कि रक्षा, सुरक्षा सांस्कृतिक तथा आतंकवाद के मुद्दों को स्थान दिये जाने की पहल की है।
- इस नीति की सफलता काफी हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि भविष्य मे भारत, चीन और अमेरिका के आपस में कैसे संबंध हैं।
- इस सन्दर्भ मे पूर्वी देशों का संगठन सार्क ¼।।त्ब्) कोई विशेष प्रभाव छोड़ सका है। सार्क ही सदस्यता से विशेष उपलब्धि न होने पर आज पूर्वी देशों के भारत के संबंधो को नई दिशा प्रदान करने में ईस्ट पॉलिसी की सार्थकता बढ़ जाती है।
- प्रधानमंत्री पी0वी0 नरसिम्हाराव के समय में बनी लुक ईस्ट नीति जिसे बाद में अटल बिहारी वाजपेयी, मनमोहन सिंह द्वारा क्रियान्वित करने हेतु कदम उठाए गए वर्तमान में एक्ट ईस्ट के नाम से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में आगे बढ़ाया जा रहा है इस नीति के समक्ष वर्तमान में चुनौतियाँ भी है और अवसर भी हैं। विशेषकर जब चीन दूसरी बड़ी शक्ति के रूप में उभर कर आ रहा है और अमेरिका उसे एक खतरे के रूप में देख रहा है। ऐसे में भारत कूटनीतिक स्तर पर अपने पक्ष में इस नीति के द्वारा क्या क्या सम्भावनायें व अवसर उत्पन्न कर सकता है यह देखना दिलचस्प होगा।

उद्घाटन सत्र में 'एक्ट ईस्ट' पर इस मंथन मनन के उपरान्त संगोष्ठी की उप संयोजिका

डा0 योगेन्द्री के धन्यवाद वक्तव्य के साथ सत्र का समापन हो गया। अपरान्ह योजनोपरान्त तकनीकि सत्रों मे शोध पत्रों के प्रस्तुतिकरण का सिलसिला शुरू हुआ। योजनोपरान्त आरम्भ हुये तकनीकि सत्र की अध्यक्षता भोपाल, नेशनल लॉ युनिवर्सिटी की प्रोफेसर राका आर्या द्वारा की गयी। रैपटियर के रूप में योगदान दिया डा0 योगेन्द्री ने। सत्र में प्ब्। से स्मिता तिवारी ने ।बज म्ंज च्वसपबल पर प्रकाश डाला और प्ब्। के इस क्षेत्र कार्यो मे भी अवगत कराया एक्ट ईस्ट पॉलिसी के विविध पक्षों को समेटे हुये इस सत्र में कुल 15 शोधपत्र प्रस्तुत किये गये। जिसमें चीन और भारत के संबंध तथा इसमें अमेरिका की भूमिका पर प्रश्नोत्तर काल में विशेष रूप से चर्चा हुई। एम0एम0यू0 से प्रो0 इमरान अहमद का शोधपत्र जिसमें चीन के सन्दर्भ में भारत के आर्थिक संबंधो व चुनौतियों पर प्रकाश डाला। इस शोधपत्र ने खासा ध्यानकर्षण किया। प्रश्नोत्तर काल के उपरान्त सत्र की अध्यक्षा डा0 राका आर्या के वक्तव्य के साथ इस सत्र का समापन कर दिया गया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन दिनांक 02.02.2016 को तकनीकि सत्र में शोधपत्रों के प्रस्तुतिकरण का दौर चल पड़ा विभिन्न आर्थिक एवं वाणिज्यिक क्षेत्रों के विशेषज्ञ से शुशोभित इस में विचार विमर्श के मुख्य बिन्दु पूर्व एशियाई देशों के साथ भारत के व्यापारिक संबंध एवं आर्थिक नीतियाँ रही। इस सत्र की अध्यक्षता की समाज विज्ञान संस्थान, आगरा मे समाज शास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो0 मोहम्मद अर्शद जी के द्वारा, रिपरटियर के रूप में योगदान दिया डा0 योगेन्द्री ने। डा0 राका आर्या ने इस सत्र में विशेष वक्ता के में अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया

इसके इसके अतिरिक्त, डा0 अंशु, प्रो0 धनजंय, डा0 अरविंद के द्वारा पी0पी0टी0 प्रस्तुतिकरण दिये गये। महाविद्यालय की छात्रा अजंली द्वारा पी0पी0टी प्रस्तुतिकरण की उपस्थित अतिथियों एवं अध्यक्ष ने सराहना की। संजीव एवं सारगाभित शोधपत्रों का प्रस्तुतिकरण के उपरान्त तकनीकी सत्र में प्रश्नोत्तर काल दौर और अन्त में अध्यक्ष के वक्तव्य के साथ तकनीकी सत्र का समापन कर दिया गया।

तकनीकी सत्र के समापन के उपरान्त समापन समारोह का शुभारम्भ किया गया। समापन समारोह मे मंचासीन अतिथिगण थे साउथ एशिया यूनिवर्सिटी दिल्ली से प्रो0 धंजजय त्रिपाठी, लेडी श्रीराम कॉलेज, दिल्ली से डा0 अरंविद एवं डा0 अर्शद। मंचासीन अतिथिगण एवं प्रस्तुत किये गये शोधपत्रों के उपरान्त समापन संत्र मे एक्ट ईस्ट पॉलिसी के सन्दर्भ में निम्न बिन्दुओं को विचारणीय माना गया।

- बदलते वैश्विक परिदृश्य के अनुरूप भारत की पूर्व की देशों के साथ नीति में संशोधन व परिवर्तन मूल्यांकन होते रहना आवश्यक है।
- चीन का दूसरी बड़ी शक्ति के रूप में उभरना, जो कि भारत का पड़ोसी देश होने साथ भारत के उससे सबंध में नरमी गरमी का इतिहास गवाह है। इस चुनौती पर गंभीरता पूर्वक मनन किये जाने की आवश्यकता है। विशेषतः अब जब अमेरिका चीन की बढ़ती शक्ति को खतरे के रूप में देखने लगा है।
- अमेरिका और चीन के संबंध और भारत के दोनों देशों से संबंध पर एक्ट ईस्ट पॉलिसी की सफलता निर्भर है यह चुनौती भी है और इसे राष्ट्र हित में कैसे अवसर के रूप में परिवर्तित करेगा भारत यह देखना दिलचस्प होगा।
- चीनी उत्पाद भारतीय बाजार को प्रभावित कर रहे है। अतः आर्थिक पक्षों पर एक्ट पॉलिसी में चीन की भूमिका चुनौतीपूर्ण है जिससे भारत को निपटने के लिए कूटनीतिक प्रयास करने होंगे।

इन चुनौतियों और सुझावों पर मंथन मनन के उपरांत संगोष्ठी की संयोजिका एवं महाविद्यालय की प्राचार्या डा0 प्रीति जौहरी जी ने धन्यवाद ज्ञापन के साथ संगोष्ठी का समापन कर दिया गया।

***